Day ⑧ PAGE NO.: 10 DATE: 15 July

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र :—
The scope of sociology

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के संबंध में विद्वानों में अनेक मतभेद है। स्वाभाविक है क्योंकि किसी भी प्रगतिशील विज्ञान का विषय क्षेत्र न तो पूर्णतः निश्चित किया जा सकता है और न ही इसे किसी निश्चित सीमा के अंदर बांधा जा सकता है। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए इस संबंध में निम्न दो प्रमुख सम्प्रदायों का वर्णन किया जा सकता है :—

(i) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal school)

यह सम्प्रदाय समाजशास्त्र को एक विशेष विज्ञान मानता है। इस सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थक 'जार्ज सिमेल', 'वीरकान्त' 'वान वीज' आदि 'मैक्स वेबर' आदि हैं। अन्य विशेष विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि की तरह ही समाजशास्त्र भी एक विशेष और स्वतंत्र विज्ञान है यह इस सम्प्रदाय का मत है 'समाजशास्त्र' इन विद्वानों के मत अनुसार "मानवीय संबंधों के स्वरूप या समाजीकरण संबंधों के स्वरूप है का अध्ययन है। सामाजिक संबंधों के स्वरूपात्मक पक्ष पर जोर देने के कारण यह स्वरूपात्मक ~~पक्ष पर~~ सम्प्रदाय कहलाता है।

'जार्ज सिमेल' के विचार सामाजिक संबंधों के स्वरूप और उनकी अंतः वस्तु के भेद के आधार पर है इनके अनुसार स्वरूप और अंतः वस्तु दोनों ही अलग-अलग रूप है या अस्तित्व है। उदा: एक ही आकार का गेंद लोहा, रबड़ या लकड़ी की बनाई ~~गई~~ जा सकती है। ठीक उसी

विभिन्न आकार या स्वरूपों की एक ही अंत: वस्तु हो सकती है। अर्थात् केवल लकड़ी या रबड़ से हम विभिन्न स्वरूपों की गेंद बना सकते है। यह स्पष्ट है कि स्वरूप और अंत: वस्तु दो अलग-अलग वस्तु है। सामाजिक संबंधों में भी स्वरूप और अंत: वस्तु अलग अस्तित्व है। उदा: प्रभुत्व, प्रतिस्पर्धा आदि सामाजिक संबंधों के स्वरूपों में से प्रत्येक स्वरूप विभिन्न अन्त: वस्तुओं - परिवार, समिति, राजनीतिक दल में पाया जाता है क्योंकि अंत: वस्तुओं का अध्ययन तो अन्य सामाजिक विज्ञानिक करते ही हैं अत: समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान के रूप में स्वरूपों का अध्ययन है करता है। इस तरह जार्ज सिमेल का मत है कि समाजशास्त्र को सामाजिक संबंधों के प्रमुख संबंधों को अधीनता, अनुकरण श्रम विभाजन प्रतिस्पर्धा आदि का अध्ययन करना चाहिए।

'वीरकान्त' के अनुसार "समाज उन मानसिक यह मन संबंधी संबंधों के अंतिम स्वरूपों का अध्ययन करता है जो मनुष्य को एक दूसरे से बांधते है। इनका मत है कि यदि दो व्यक्तियों में परस्पर घनिष्ठ मित्रता हो तो उस मित्रता का जन्म, अच्छाई या बुराई आदि का अध्ययन करके उस मानसिक बंधन का अध्ययन करेगा। जिसके कारण वह मित्रता बनी हुई है। वीरकान्त के विचार में समाजशास्त्र को घृणा, सम्मान प्रेम लज्जा आदि मानसिक संबंधों में स्वरूप का अध्ययन करना चाहिए।

आलोचना —

(1) इन सम्प्रदायों के दृष्टिकोण की प्रमुख कमी यह है कि ~~समाजशास्त्र~~ इसमें यह गलत धारणा पनप जाती है कि समाजशास्त्र एक पूर्णतः स्वतंत्र विज्ञान है अर्थात समाजशास्त्र का अन्य किसी विज्ञान से कोई संबंध नहीं है। यह सूचना है कि अन्य सामाजिक विज्ञानों की बात तो अलग है। प्राकृतिक विज्ञानों से भी समाजशास्त्र को सहायता लेनी पड़ती है।

(2) यह सम्प्रदाये की एक अन्य कमी यह है कि यह सम्प्रदाये भौतिक वस्तुओं की तरह ही मानवीय संबंधों के स्वरूपों को उनकी अंतः वस्तुओं से अलग मान लेता है जबकि यह बात सामाजिक संबंधों के बारे में सत्य नहीं है। 'सोरोकिन' के अनुसार "हम एक गिलास शराब, जल और चीनी से बिना उसके स्वरूप को परिवर्तित किये ही भर सकते है परन्तु मैं एक सामाजिक ~~संस्था~~ संस्था के विषय में कल्पना भी नहीं कर सकता जिसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होगा, जबकि उसके सदस्यों में परिवर्तन हुआ हो"। उदा: एक कॉलेज की अंतः वस्तु (अंदर की बात) मुख्य रूप से अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच एक भारतीय संबंध होता है। उस अवस्था में इन अध्यापकों और विद्यार्थियों के पारस्परिक संबंधों का स्वरूप एक निश्चित प्रकार का होगा पर यदि कॉलेज में सभी अध्यापक और विद्यार्थी के रूप में भारतीयों के स्थान पर चीनियों या रूसियों को भर

Scanned with CamScanner

The

PAGE NO.: 13.
DATE: / /

(11)

दिया जाए तो अध्यापक और विद्यार्थियों के पारस्परिक संबंधों का रूप भी बदल जाएगा। अन्तः वस्तु के बारे में (student or teacher) अध्ययन किये बिना इसके संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन नहीं किया जा सकता।

(3) इस सम्प्रदाय का यह मत भी त्रुटिपूर्ण है कि सामाजिक संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन समाजशास्त्र के अतिरिक्त अन्य कोई विज्ञान नहीं करता जबकि विधि विधान (science of law) सामाजिक संबंधों के अनेक स्वरूपों जैसे (दास) दासता, स्वामित्व (मालिक), संघर्ष (आज्ञापालन) का अध्ययन करता है।

⟶ ⟶ ⟶

2. समन्वयवाद सम्प्रदाय :- इस सम्प्रदाय के synthetic अनुसार समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान न होकर एक समान्य विज्ञान है। इस सम्प्रदाय के समर्थकों का विचार है कि समाजिक जीवन के विशेष पक्षों जैसे- आर्थिक, राजनीतिक आदि के संबंध में विशिष्ट एवं गहन अध्ययन करने वाले कुछ विशिष्ट विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि के अतिरिक्त समाज के अन्य समान्य विज्ञान जिसमें समाजशास्त्र की भी आवश्यकता है जो दूसरे विज्ञानों को एक दूसरे से मिलाने एवं समाजिक जीवन की समान्य अवस्थाओं से हमारा परिचय कराने का कार्य करते हैं जिनमें ~~फार्महाउस~~ हाबहाउस (hobhouse) सोरोकिन, दुरखीम आदि विद्वानों ने इस सम्प्रदाय के समर्थक रहे हैं। इस सम्प्रदाय के विचारों को मुख्यता निम्न दो आधारों पर समझाया जा सकता है -

(i) समाज एक शरीर या जीवधारी रचना नहीं है फिर भी कुछ अर्थों में समाज भी शरीर की भांती है जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग एक दूसरे से संबंधित है इसी प्रकार समाज के विभिन्न अंगो में भी आपसी संबंध तथा निर्भरता देखने को मिलती है। उदा:- किसी एक भाग में जब समाज में परिवर्तन होने लगता है तो दूसरे अन्य भागों में भी कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता है जैसे, कश्मीर में चल रही हिंसात्मक घटनाओं ने प्राय: समस्त भारतवासियों के जीवन को प्रभावित किया।

Scanned with CamScanner

कश्मीर इसी प्रकार जनवरी में 1991 में प्रारंभ हुए खाड़ी युद्ध ने सभी भागों को प्रभावित किया था। इस कारण यह आवश्यक है कि समाज का अध्ययन सम्पूर्ण रूप से किया जाए इस प्रकार का अध्ययन अन्य कोई भी विज्ञान में नहीं किया जाता इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र ही एक ऐसा विज्ञान है जो समाज का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करता है।

(ii) हमारा सामाजिक जीवन केवल पारिवारिक या धार्मिक अथवा राजनीतिक या आर्थिक पहलू पर ही आश्रित नहीं है बल्कि इन सबके योग और अंत: संबंधो से ही हमारा सामाजिक जीवन पूर्ण होता है। इसलिए इन विशेष विज्ञानों के अतिरिक्त एक ऐसे विज्ञान की भी आवश्यकता है जो इन अंत: संबंधों का अध्ययन करे अर्थात संपूर्ण सामाजिक जीवन के बारे में हमें सामान्य ज्ञान दे सके वह कार्य सिर्फ समाजशास्त्र से ही पूरा करने की आशा की जाती है।

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को समझते हुए 'सोरोकिन' ने स्पष्ट लिखा है कि "मान लिजिए यदि सामाजिक घटनाओं को वर्गों में वर्गीकृत कर दिया जाए और प्रत्येक वर्ग का अध्ययन एक विशेष सामाजिक विज्ञान करे तो इन विशेष सामाजिक विज्ञानों के अतिरिक्त एक ऐसे विज्ञान की आवश्यकता होगी जो सामान्य एवं विशेष विज्ञानों के संबंधों का अध्ययन करे"। अत: स्पष्ट है कि समाजशास्त्र सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं में पायी जाने वाली सामान्य घटनाओं का अध्ययन

करता है।

आलोचना:— समन्वयवाद सम्प्रदाय भी आलोचना से परे है। वास्तव में इस विचारधारा ने भी अनेक भ्रम उत्पन्न कर दिया है। यदि समाजशास्त्र को केवल एक विज्ञान या अन्य सामाजिक विज्ञानों की 'खिचड़ी' मात्र समझा जाता है। मात्र समझा जाता है। तो यह समाजशास्त्र के साथ अन्याय ही होगा। समन्वयवाद आधार बुरा नहीं है पर समाजशास्त्र एक विशिष्ट अस्तित्व भी बहुत जरूरी है।

18 July Robert veersteed के अनुसार "समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति की प्रमुख विशेषता है:—

1. समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है न कि प्राकृतिक विज्ञान।

2. समाजशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है न कि आदर्शात्मक विज्ञान।

3. समाजशास्त्र एक व्यवहारिक विज्ञान है।

4. समाजशास्त्र एक मूर्त विज्ञान है।

5. समाजशास्त्र एक समान्यकरण विज्ञान है न कि विशेषीकरण विज्ञान है।

6. समाजशास्त्र एक तार्किक विज्ञान और अनुभवात्मक विज्ञान है।

Stop

Scanned with CamScan